Kumari Jayati Singh (1)

20.4.2020 First

प्रश्न — उत्तरवैदिक काल के मूल स्रोतों का वर्णन करें।

उत्तर — आर्यों की सभ्यता का द्वितीय चरण उत्तरवैदिक सभ्यता के नाम से जाना जाता है। इस अवधि में ऋग्वैदिक काल के स्थापित व्यवस्था में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ। उत्तरवैदिक काल की अवधि 1000 – 600 ई०पू० की मानी जाती है। इस समय की जानकारी हमें उत्तरवैदिक साहित्य से होती है। इसलिए इसे उत्तरवैदिक सभ्यता कहा जाता है। उत्तरवैदिक साहित्य का बड़ा योगदान है जिससे इस समय की व्यवस्था पर प्रकाश पड़ता है। इसके अंतर्गत सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण ग्रंथ और उपनिषद् आते हैं। उत्तरवैदिक काल की मुख्य विशेषताएँ वैदिक राज्य के स्वरूप में परिवर्तन, क्षेत्रीय राज्यों का उदय, प्रशासनिक विकास, वर्णव्यवस्था का जटिल होना, आश्रमव्यवस्था का उदय, जातिव्यवस्था की स्थापना तथा धार्मिक कर्मकांडों की जटिलता आदि हैं।

NOTES

(i) राजनीतिक परिवर्तन — उत्तरवैदिक काल में आर्यों की राजनीतिक ~~[illegible]~~ व्यवस्था में काफी परिवर्तन आ गया था। इस काल में आर्यों ने शक्तिशाली राज्यों की स्थापना कर ली थी।

Scanned with CamScanner

MEETINGS / APPOINTMENTS

आर्य सभ्यता का क्रमिक विकास विस्तार हो चुका था। कुरु, पांचाल, कोशल, विदेह और काशी जैसे बड़े राज्यों की स्थापना हो चुकी थी इनलोगों में प्रेम और आपसी ... इसलिए साम्राज्य विस्तार के लिए संघर्ष होते रहते थे।

(11) सामाजिक अवस्था —— पूर्व वैदिक काल की तुलना में उत्तर वैदिक काल के लोगों के सामाजिक जीवन में भिन्नता आ गई थी। जीवन अधिक जटिल हो गया था। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, एवं शूद्र अब वर्णगत नहीं थे। प्रत्येक वर्ण का निश्चित कर्म था। समाज में ब्राह्मण और क्षत्रिय वर्गों का प्रभाव बढ़ गया था। जबकि और वर्णों का शोषण होने लगा था। सामाजिक जीवन में और भी कई सारी तब्दीलियाँ भी जैसे आश्रम व्यवस्था, स्त्रियों की स्थिति, उत्तर वैदिक काल में स्त्रियों की स्थिति दयनीय हो गई थी। राज परिवार में कई विवाह की प्रथा थी। उत्तर वैदिक काल में ही गार्गी, मैत्रेयी जैसी विदुषी नारियाँ हुईं। वेशभूषा, खान-पान, मनोरंजन, शिक्षा एवं लोककला, औषधि इत्यादि सम्मिलित थीं। इस प्रकार उत्तर वैदिक आर्यों का जीवन पूर्व

NOTES

2015

Scanned with CamScanner

वैदिक आर्यों के अपेक्षा अधिक विकसित था।

आर्थिक जीवन — उत्तरवैदिक काल में आर्यों की स्थिति काफी अच्छी थी। आर्यों को खेती के तरीके, फसल और बीज की जानकारी हो चुकी थी। इस काल में वाणिज्य, उद्योग-धंधे, व्यापार आदि सभी क्षेत्रों में प्रगति हुई। इस प्रकार इनका आर्थिक जीवन काफी उन्नत हो गया था।

धार्मिक जीवन — उत्तरवैदिक काल में आर्यों के जीवन में धर्म के मामले में बहुत ही जटिलता आ गई थी। धर्म का रूप याज्ञिक हो गया था। अश्वमेध, राजसूय, आदि बड़े यज्ञ सामान्य लोगों के लिए संभव नहीं थे। ऋषियों का महत्त्व बढ़ गया था।

उत्तरवैदिक काल के धर्म ब्राह्मणशील भी होते थे। इस काल में ही कई प्रकार के ग्रंथों की रचना हुई। इस प्रकार उत्तरवैदिक काल क्रांतिकारी परिवर्तन का युग था। ऋग्वेद में स्थापित व्यवस्था इस काल में पूरी तरह परिवर्तित हो गई जिसका भारतीय सभ्यता और संस्कृति पर गहरा प्रभाव डाला।

—— × ——